हिंदू देवी-देवताओं एवं त्योहारों पर

नज़ीर अकबराबादी की शायरी

चयन और सम्पादन:

दिलीप शाक्य

हिन्दू देवी-देवताओं एवं त्यौहारों पर

नज़ीर अक़बराबादी की शायरी

चयन और संपादन

दिलीप शाक्य

ISBN: "978-93-87621-32-9"

प्रकाशक: नॉटनल

दिलीप शाक्य

जन्म : 18 दिसम्बर 1976

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली से एम.ए., एम.फिल. एवं पी-एच.डी.। 2015 से 2018 तक मध्य-यूरोपीय देश हंगरी के ओत्वॉश लोरान्द विश्वविद्यालय, बुदापैश्त में आई.सी.सी.आर.-हिन्दी चेयर पर विज़िटिंग प्रोफेसर।

एक प्रोफ़ेसर के नोट्स तथा जलसाघर उनके चर्चित पत्रिका-स्तम्भ रहे हैं। उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ, कथादेश-सर्नुनोस तथा विश्व हिन्दी साहित्य परिषद की ओर से कविता, कहानी तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी-प्रतिनिधित्व के लिए पुरस्कृत किया जा चुका है।

प्रकाशित पुस्तकें-

कविता-संग्रह : कविता में उगी दूब (भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली) मैं और वह En Es O (बुदापैश्त, हंगरी में प्रकाशित, 2018)

आलोचना : आख्यान और नई कविता (आखर प्रकाशन, दिल्ली, 2012) समकालीन कविता और राजेश जोशी (रूबी पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2014) कविता की समझ (नयी किताब, दिल्ली, 2015)

सिनेमा : सिनेमा का माया-दर्पण (अतुल्य पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2017)

संपादन : ओत्वॉश लोरान्द विश्वविद्यालय के भारत-अध्ययन विभाग की त्रैमासिक पत्रिका प्रयास का संपादन (2016-2018)

संप्रति : जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर।

भूमिका

हर महान कवि की कविता में कोई न कोई नगर सांस लेता है। महाकवि नज़ीर अकबरावादी की कविता में यह नगर आगरा है। ऐसा माना जाता है कि नज़ीर अकबरावादी का जन्म सन 1730 में दिल्ली में हुआ लेकिन उन्होंने अपना सारा जीवन मृत्यु पर्यन्त सन 1830 तक आगरा में ही व्यतीत किया। उनके नाम में जुड़ा अकबरावाद आगरा का ही पुराना नाम है। नज़ीर को आगरा से ऐसा प्रेम था कि उन्होंने कभी आगरा की सीमा से बाहर जाने की इच्छा नहीं की। आगरे पर उनकी कई नज़्में हैं। मसलन 'शहर अकबरावाद' और 'आगरे की तैराकी'। आगरे से अपने प्रेम को वे इस प्रकार प्रकट करते हैं :

"आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है

मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है

मुफ़लिस कहो, फ़कीर कहो, आगरे का है

शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है"

आगरा और उसके आस-पास का क्षेत्र ब्रज भाषा का क्षेत्र माना जाता है। नज़ीर की शायरी में ब्रज-क्षेत्र की लोक-संस्कृति और वहां के जन-जीवन का बड़ा सुन्दर चित्रण मिलता है। विशेषकर श्री कृष्ण की जीवन-लीला के चित्र। सुदामा और कृष्ण की मित्रता पर विरचित उनकी नज़्म तो अद्भुत है। कृष्ण की आराधना और ब्रज-क्षेत्र के लोकजीवन का वर्णन नज़ीर की शायरी को उस परम्परा से सम्बद्ध करता है जिसमें रसखान, मीराबाई और सूरदास का काव्य मिलता है। इसी प्रकार दुर्गा, शिव और भैंरो पर लिखी उनकी स्तुतियां भारतीय जनमानस में प्रचलित हिन्दू मिथकों और लोक-विश्वासों से उर्दू शायरी की परम्परा को समृद्ध करती हैं। होली पर लिखी उनकी नज़्में आज भी बड़े प्रेम से गायी जाती हैं।

नज़ीर अकबारावादी की शायरी भारतीय नवजागरण के आरंभिक दौर में हिन्दू-मुस्लिम सामासिक संस्कृति के विकास से सम्बद्ध तत्कालीन प्रयासों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनसे पहले अमीर खुसरो, मलिक मोहम्मद जायसी और रसखान की कविता में इस सामासिक संस्कृति का एक मार्ग खुलता है। नज़ीर की शायरी इस मार्ग का उत्कृष्टतम विस्तार है। ऐसा विस्तार जो आस्मानी हवाओं के बरअक्स उस धरती की जड़ों से संवाद करता चलता है जिस पर नज़ीर के युग का हृदय धड़कता है। हबीब तनवीर के नाटक आगरा बाजार में उनके काव्य-व्यक्तित्व को अत्यंत खूबसूरती से दर्शाया गया है।

नज़ीर की शायरी एक और दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह दृष्टि है हिन्दी का एक साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित होना। नज़ीर अकबरावादी मीर तकी 'मीर' के समकालीन माने जाते हैं। मीर तक आते आते उर्दू शायरी का कथ्य और शिल्प तो अपने उत्कृष्टतम रूप में दिखाई देता है किन्तु खड़ी बोली हिन्दी कविता के कथ्य और शिल्प के आकार लेने का यह प्रारंभिक समय था।

सन् 1800 में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित पफोर्ट विलियम कॉलेज और सन् 1826 में पंडित नवलकिशोर शुक्ल द्वारा उदंत मार्तंड के प्रकाशन से हिन्दी गद्य का आकार तो बनने लगा था किन्तु हिन्दी कविता के बारे में हम भारतेन्दु से पहले ऐसे किसी आकार को चिन्हित नहीं करते। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु के उस कथन को प्रस्थान बिन्दु माना जाता है जिसमें उन्होंने सन 1873 में हिन्दी के नए चाल में ढलने की घोषणा की थी। यदि इस कथन के प्रसंग में नज़ीर अकबरावादी की रचनाओं की भाषा और काव्य-वस्तु को देखें तो क्या हमें सन 1800 के फ़ोर्ट विलियम कॉलेज और सन 1830 में नज़ीर की मृत्यु के बीच के समय को खड़ी बोली हिन्दी कविता के आरंभिक स्वरूप के बतौर चिन्हित करके नहीं देखना चाहिए?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के उल्लेख अनुसार हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास लिखने वाले फ़्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने सन 1852 में हिन्दी-उर्दू प्रसंग में लिखा था- "हिन्दी में हिन्दू धर्म का आभास है-वह हिन्दू धर्म जिसके मूल में बुतपरस्ती और उसके आनुषांगिक विधन है। इसके विपरीत उर्दू में इस्लामी संस्कृति और आचार-व्यवहार का संचय है।"

नज़ीर अकबरावादी की शायरी विशेषकर इस संकलन में बंधी रचनाएं गार्सा द तासी के इस साम्प्रदायिक कथन का प्रत्याख्यान रचती है। उनकी शायरी हिन्दुओं के धर्मिक जीवन की अनेक झांकियों से सुसज्जित है। 19वीं सदी की हिन्दू-उर्दू भाषायी साम्प्रदायिकता के बीच वे सामासिक संस्कृति के उज्ज्वल प्रतीक के रूप में नज़र आते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नज़ीर को एक मनमौजी सूफ़ीभक्त के रूप में याद किया है।

इस संकलन में आपको ऐसी अनेक नज़्में दिखाई देंगीं जिनके आधर पर भारतेन्दु की ब्रज-मिश्रित खड़ी बोली कविता के समानान्तर नज़ीर की उर्दू-मिश्रित खड़ी बोली कविता भारतेन्दु के बाद की हिन्दी कविता के अधिक निकट मालूम पड़ेगी। यह निकटकता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है जब हम इसे हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के प्रसंग में देखने की कोशिश करते हैं। इस नुक्त-ए-नज़र से यदि नज़ीर अकबरावादी की शायरी का एक शब्दकोश तैयार किया जाए तो वह निश्चय ही हिन्दुस्तानी ज़बान में लिखी जाने वाली कविता का पहला सर्वाधिक प्रामाणिक शब्दकोश कहलाएगा।

उर्दू और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में नज़ीर के संकलन तैयार किए गए हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित नज़ीर ग्रंथावली में उनके जिन हिन्दी संकलनों का ज़िक्र मिलता है वे इस प्रकार हैं :

1. अशआर-ए-मियां नज़ीर : लल्लू लाल, कलकत्ता, सन 1812
2. नज़ीर के शेर : ज्ञान रत्नाकर प्रेस, कलकत्ता, सन 1836
3. दीवान-ए-नज़ीर : इकबाल, शहंशाही प्रेस, आगरा, सन 1897
4. अशआर-ए-नज़ीर : राजनारायण अग्रवाल, हाफ़िज शम्सुद्दीन,
5. नज़ीर बानी : फ़िराक़ गोरखपुरी
6. महाकवि बेनज़ीर : रघुराज किशोर, वतन-हरिदास एण्ड कम्पनी, मथुरा
7. नज़ीर काव्य संग्रह : पंडित उदय शंकर शास्त्री

8. कविवर नज़ीर : डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

9. नज़ीर अकबरावादी और उनकी शायरी : सरस्वती सरन 'कैफ'

10. महाकवि नज़ीर अकबरावादी : रघुराज किशोर वतन

11. दीवान-ए-नज़ीर : मुहम्मदी प्रैस, धनकोट, आगरा।

इनके अतिरिक्त भी अनेक संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत संकलन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है और संभवत: पहला है कि एक ही स्थान पर पाठक नज़ीर की ऐसी सभी रचनाओं से परिचित हो सकेंगे जो हिन्दू देवी देवताओं और त्योहारों पर केन्द्रित हैं। अध्येयताओं के लिए भी सुभीता होगा कि वे हिन्दू जनमानस एवं लोक-जीवन में प्रचलित दैवीय लीला-संसार के संबंध में नज़ीर की जीवन-दृष्टि से परिचित हो सकेंगे।

मंगलकामनओं सहित,

दिलीप शाक्य

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग

जमिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

अनुक्रम

गणेश जी की स्तुति	9
श्री कृष्ण जी की तारीफ़ में	14
सुदामा चरित	17
महादेव जी का ब्याह	26
गुरू नानक शाह	50
तारीफ़ भैरों की	53
दुर्गा जी के दर्शन	58
होली ने मचाया है अजब रंग ज़मीं पर	61
हिंद की देखी बहार होली में	65
मज़ा है सैर है हर सू कमाल होली में	70
जब फ़ागुन रंग झमकते हों	76
फ़क़ीर की होली	78
बल्देव जी का मेला	81
कंस का मेला	94
लल्लू जगधर का मेला	100
कनकौए और पतंग (निर्जला)	108

गणेश जी की स्तुति

अव्वल तो दिल में कीजिए पूजन गनेश जी।

स्तुति भी फिर बखानिए धन-धन गनेश जी।

भक्तों को अपने देते हैं दर्शन गनेश जी।

वरदान बख्शते हैं जो देवन गनेश जी।

हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी।

देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।1।।

माथे पै अर्द्ध चन्द्र की शोभा, मैं क्या कहूं।

उपमा नहीं बने है मैं चुपका ही हो रहूं।

उस छवि को देख देख के आनंद सुख लहूं।

लैलो निहार[1] दिल में सदा अपने वो जपूं। 1. रात-दिन

हर आन ध्यान दीजिए सुमिरन गनेश जी।

देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।2।।

इक दन्त को जो देखा किया खूब है बहार।

इस पै हजार चन्द की शोभा को डालूं वार।

इनके गुणानुवाद का है कुछ नहीं शुमार।

हर वक्त दिल में आता है अपने यही विचार।

हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी।

देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।3।।